साहिर लुधियानवी

वो सुबह कभी तो आएगी...

वो सुबह कभी तो आएगी
इन काली सदियों के सर से
जब रात का आँचल ढलकेगा
जब दुख के बादल पिघलेंगे
जब सुख का सागर छलकेगा
जब अम्बर झूम के नाचेगा
जब धरती नगमे गाएगी

वो सुबह कभी तो आएगी
बीतेंगे कभी तो दिन आखिर
ये भूख के और बेकारी के
टूटेंगे कभी तो दिन आखिर
दौलत-ओ-इज़ारेदारी के
जब एक अनोखी दुनिया की
बुनियाद उठाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आएगी

मनहूस समाजी ढाँचों में
जब जुल्म न पाले जाएँगे
जब हाथ न काटे जाएँगे
जब सर न उछाले जाएँगे
जेलों के बिना जब दुनिया की
सरकार चलाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आएगी

संसार के सारे मेहनतकश
खेतों से, मिलों से निकलेंगे
बेघर, बेदर, बेबस इन्सान
तारीक बिलों से निकलेंगे
दुनिया अमन, खुशहाली के
फूलों से सजाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आएगी

किशोर पँवार

मई के फूल

अप्रैल-मई का महीना लिली के नाम किया जा सकता है। बगीचों व घरों की बगियों में लाउड-स्पीकर लिली खिली दिख जाएगी। लिली के लाल, सफेद, केसरिया फूल देखने पर लगता है जैसे किसी खम्भे पर दो विपरीत दिशाओं में लाउड-स्पीकर लगे हैं। कुछ दिनों बाद ही फुटबॉल (या फूलबॉल) लिली खिल जाएगी।

मई-जून में अचानक एक लचीली डण्डी ज़मीन से फूटती हैं। लगता है जैसे फुटबॉल लिली चार-पाँच महीने की नींद से अचानक जागी हो। यह डण्डी बारह से अठारह इंच लम्बी होती है। इसका सिरा देखते ही देखते लाल-गुलाबी फूलों की गेंद में बदल जाता है। इन फूलों को देखकर चौराहे पर लगे फव्वारे की याद आती है। इस पौधे पर साल भर सरल पत्तियाँ लगी रहती हैं। जब पत्तियाँ सूख जाती हैं तो अरबी जैसा केवल सूखा कन्द ही ज़मीन के अन्दर दबा पड़ा रहता है। बसन्त के बाद अचानक इसमें अंकुर फूट पड़ते हैं। इसे पाउडर पफ लिली, अफ्रीकन लिली या मे

चित्र व आकल्पनः तापोशी घोषाल